

---

.. devIpancharatnastutiH ..

॥ देवीपञ्चरत्नस्तुतिः ॥

---

जंभाराति-मुखादितेय-परिषत्संभाव्यमाना सदा  
कुंभाकार-पयोधराद्रितनया शुम्भासुर-द्वेषिणी ।  
रम्भाभोरुमती सुधानिभ-वचोगुम्भावहा पञ्जुषां  
शं भामा त्रिपुरद्विषो वितनुयाद्दम्भापहा दुर्हताम् ॥ १ ॥  
जम्भरिपु-नीलरुचिदृग्जनितमारा  
कुम्भमदलोपकृदुरोजयुगभारा ।  
शुम्भमुख-देवरिपु-बृन्दजयितसारा  
गुम्पयितु मे गिरमुमा विधृतकीरा ॥ २ ॥  
शम्बरसपत्नरिपवे कलितमोदे  
बिम्बनिभ-दन्तपटि धूतनत-खेदे ।  
अम्ब धिषणां वितर दैत्यकुल-भीदे  
शम्बधरमुख्य-सुरबृन्द-नुतपादे ॥ ३ ॥  
पूरित-पदाब्ज-नतिकृन्नखिल-कामा  
दारित-निशाचरकुलाऽघहरनामा ।  
ईरितगुणा श्रुतिभिरद्रिशयभामा  
सारिततिमर्दयतु मौलिधृत-सोमा ॥ ४ ॥  
कज्जल-कनक-हिमरुचः  
पत्युर्वामाङ्क-हृदय-वदन-स्थाः ।  
बल-धन-विद्या-दात्रीः  
दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वतीर्वन्दे ॥ ५ ॥  
पञ्चरत्नाभिधा सेयं पञ्चास्य-प्रेयसी-स्तुतिः ।  
श्रीरामशर्म-कलिता प्रीयतां पार्वती ततः ॥ ६ ॥  
॥ देवी पञ्चरत्नस्तुतिः समाप्त ॥

---

Encoded and proofread by N.Balasubramanian bbalu@satyam.net.in

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)  
Last updated December 10, 2008